## पाठ-12

# गिरधर की कुण्डलियाँ

**आइए सीखें:** ● लोक व्यवहार की शिक्षा तथा प्रेरणा लेना ● अलंकार पहचानना ● चौपाई, रोला, एवं कुण्डलियाँ छंदों का परिचय ● अनुस्वार और अनुनासिक तथा ● पर्यायवाची शब्द, तुकान्त शब्द से परिचय।

***पाठ परिचय-*** *गिरधर की इन कुण्डलियों में लोक व्यवहार की अनुभवजन्य एवं उपयोगी बातें हैं। इन्हें समझकर हम अपने जीवन को सहज और बेहतर बना सकते हैं।*

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाँउ न रहत निदान॥
ठाँउ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजै॥
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, सबद सुनै सब कोय॥
सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को रंग एक, काग सब भए अपावन॥
कह गिरधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥

---

**शिक्षण संकेतः** ■ पंक्तियों को हाव-भाव एवं लय के साथ पढ़ें ■ बच्चों से भी इसी प्रकार कविता पढ़ने को कहें। ■ अन्य कवियों - काका हाथरसी, दीनदयाल, गिरि आदि की कुण्डलियों के विषय में चर्चा करें ■ बच्चों के सहयोग से कुण्डलियों का अर्थ स्पष्ट करें एवं लोक व्यवहार में कितनी उपयोगी हैं इसकी चर्चा करें। ■ कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों के सहयोग से स्पष्ट करें ■ शब्दों के वाक्य प्रयोग कराएँ।

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही पे चित्त देइ॥
ताही पे चित देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै॥
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख समुझि, होय बीती सो बीती॥

**कवि परिचय : गिरधर कविराय** का जन्म संवत् 1770 में हुआ। इन्होंने बहुत सी कुण्डलियाँ लिखी हैं जो बहुत लोकप्रिय हैं। इनका जन्मस्थान अवध में माना जाता है। अपने राज्य को त्यागकर वे अपनी पत्नी के साथ इधर-उधर भटकते रहे। उसी भ्रमण के समय उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने अनेक कुण्डलियाँ रचीं। कहा जाता है जिन कुण्डलियों का प्रारम्भ 'साईं' शब्द से हुआ है, वे उनकी पत्नी द्वारा रचित हैं। शेष स्वयं गिरधर ने रची गिरधर की कुण्डलियाँ शीर्षक पुस्तक में उनकी कुण्डलियाँ संगृहीत हैं।

## अभ्यास

### बोध प्रश्न

**प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -**

(1)

| | | | |
|---|---|---|---|
| दौलत | ---------------- | अभिमान | ---------------- |
| ठाँऊ | ---------------- | जस | ---------------- |
| पाहुन | ---------------- | जग | ---------------- |
| निदान | ---------------- | जियत | ---------------- |
| निस | ---------------- | | |

(2)

| | | | |
|---|---|---|---|
| गाहक | ---------------- | बिनु | ---------------- |
| कोकिला | ---------------- | लहै | ---------------- |
| सहस | ---------------- | ठाकुर मन के | ---------------- |

(3)

ताहि ---------------- सुधि लेइ ----------------

खता ---------------- बिसारि दे ----------------

परतीती ----------------

**प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-**

क. हमें दूसरे व्यक्तियों से किस प्रकार के वचन बोलना चाहिए ?

ख. कोयल सबको अच्छी क्यों लगती है ?

ग. धनी व्यक्ति को क्या नहीं करने को कहा है ?

घ. 'गुन के गाहक' से क्या आशय है ?

ङ बीती ताहि.... कहकर कवि ने कौन-सी सलाह दी है ?

**प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-**

क. धन पाकर हमें अभिमान क्यों नहीं करना चाहिए ?

ख. कोयल और कौए की वाणी में क्या अंतर है ?

ग. बीती बातों को भूलने से क्या लाभ/हानि है ?

**प्रश्न 4. 'लोक व्यवहार की बातें' इन कुण्डलियों में हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।**

**प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए-**

क. सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को रंग एक, काग सब भए अपावन॥

ख. बीती ताहि बिसारिदे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ॥

## भाषा-अध्ययन

**प्रश्न 1.'जस' शब्द का मानकरूप 'यश' है इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए-**

सपने, सहस, सबद, गुन, परतीती, जियत, गाहक।

**प्रश्न 2. निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए -**

''सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन'' में अलंकार है-

(यमक, अनुप्रास, श्लेष)

**प्रश्न 3. इस पाठ की कुण्डलियों में 'अभिमान' शब्द के समान 'निदान' तुकान्त शब्द आया है। इसी प्रकार निम्नलिखित तालिका में से तुकान्त शब्द चुनिए और सही क्रम में लिखिए-**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | लीजै | तौलत | सुहावन | देइ, | पावै |
| | अपावन | कीजै, | दौलत | आवै | लेइ |
| सही क्रम | | | | | |

**आइए जानिए -**

इस पाठ में दो प्रकार के शब्द प्रयुक्त हुए हैं -

वर्ग (1) चंचल रंग

इनमें चंचल और रंग शब्द पर ( ं ) चिह्न लगा है।

**समझिए -**

( ं ) यह चिह्न अनुस्वार कहलाता है।

अनुस्वार का अर्थ है स्वर के बाद आने वाली ध्वनि।

यह नासिका व्यंजन है, इसे स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाते हैं।

अनुस्वार शब्द के मध्य या अन्त में ही आ सकता है, शब्द के प्रारंभ में नहीं।

यह जिस व्यंजन के पहले आता है उसी व्यंजन के वर्ग की (पंचमवर्ण) नासिका ध्वनि के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **क** | वर्ग के साथ | **ङ** | जैसे- | पंक | पङ्क |
| **च** | वर्ग के साथ | **ञ** | जैसे- | पंच | पञ्च |
| **ट** | वर्ग के साथ | **ण** | जैसे- | पंडा | पण्डा |
| **त** | वर्ग के साथ | **न** | जैसे- | पंत | पन्त |
| **प** | वर्ग के साथ | **म** | जैसे- | पंप | पम्प |

**ध्यान दीजिए -**

आज मानक रूप में पंचम वर्ण के स्थान पर ( ं ) अनुस्वार का चिह्न मान्य है।

( ँ ) यह चिह्न चन्द्र बिन्दु कहलाता है। इसका उच्चारण अनुनासिक है, आनुनासिक स्वरों का गुण है। जब इसका उच्चारण होता है, तब हवा मुख के साथ नाक से भी निकलती है।

ठाँव, हँस शब्द पर ( ँ ) लगा है।

चन्द्रबिन्दु ( ँ )लगाने के निम्नलिखित नियम है-

क. जिन स्वर मात्राओं का कोई भी हिस्सा शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता तो अनुनासिक के लिए ( ँ) का प्रयोग करते हैं। जैसे - साँस, कुआँ, पाँव।

ख. जिन स्वरों की मात्राओं का कोई भाग शिरोरेखा के ऊपर निकल जाता है, तब चन्द्रबिन्दु के स्थान पर ( ं ) का ही प्रयोग होता है जैसे - चोंच, कोंपल।

**प्रश्न 4. अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग वाले पाँच-पाँच शब्द लिखिए।**

पहले आप छंद, छंद के अंग तथा दोहा और सोरठा के विषय में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं।

**अब कुछ छंदों के विषय में और भी जानिए-**

**चौपाई** - यह मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण- मंजु विलोचन मोचन वारी। बोली देखि राम महतारी॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास-ससुर परिजनहिं पियारी॥

**रोला** - यह मात्रिक छंद है। इसमें चार-चार चरण होते हैं। इसमें प्रत्येक चरण में 11, 13 पर यति देकर 24 मात्राएँ होती है। दो चरणों के अन्त में तुक रहती है।

उदाहरण- नीलाम्बर परिधान, हरितपट पर सुन्दर है,
सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मण्डल है।
बन्दीजन खगवृन्द, शेष फन सिंहासन है।

**कुण्डलिया**- दोहा और रोला से मिलकर कुण्डलिया छंद बनता है। इसमें दोहा का अन्तिम चरण रोला का प्रथम चरण होता है तथा कुण्डलियां जिस शब्द से प्रारंभ होती है। उसी शब्द से वह समाप्त होती है।

दोहा के विषम चरणों में 13–13 तथा सम चरणों में 11–11 मात्राएँ होती है तथा रोला में 11,13 पर यति देकर 24 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण– दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारिको, ठाँउ न रहत निदान।
ठाँउ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजै।
कह गिरधर कविराय, अरे, यह सब घट तौलत।
पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।

**प्रश्न 5.** **कुंडलिया छंद के अन्य उदाहरण छाँटकर उसकी मात्राओं की गणना कीजिए?**

**प्रश्न 6.** **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द पहेली से छाँटकर लिखिए?**

**दौलत, संसार, अभिमान, पाहुन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मे | ह | मा | न |
| लो | सं | ध | ग |
| क | प | र्न | र्व |
| द | दा | ज | ग |
| र्प | अ | ति | थि |

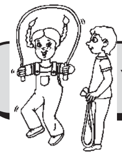

## योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय की बालसभा में गिरधर की कुण्डलियों को याद करके सुनाइए।
2. गिरधर कवि के अतिरिक्त अन्य कवियों की कुण्डलियों का संकलन कीजिए, कक्षा में सुनाइए।
3. लोक व्यवहार से संबंधित रचनाएँ संकलित कीजिए तथा कक्षा में उनकी चर्चा कीजिए।
4. गिरधर की कुण्डलियाँ पढ़कर आपके मन में जो विचार उत्पन्न हुए है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
5. नैतिक सूक्तियों का संग्रह करके अपने विद्यालय की दीवारों पर लिखिए।